International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-08-2019; Accepted: 04-09-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 18-20

'फीजी हिंदी' साहित्य एवं साहित्यकार: एक परिदृश्य

Subashni Shareen Lata
Research Scholar, DOS in Hindi, University of Mysore, Mysore, Karnataka, India

सारांश
फीजी के प्रवासी भारतीय मानक हिंदी की तुलना में, 'फीजी हिंदी' भाषा में अपनी भाव-व्यंजनाओं को अच्छी तरह से अभिव्यक्त कर पाते हैं। इसीलिए भारतवंशी साहित्यकारों ने अंग्रेजी भाषा के मोह को छोड़कर हिंदी में साहित्यिक कृतियाँ लिखनी प्रारंभ कीं। जे. एफ सीगल (1977) के अनुसार फीजी हिंदी को बहुत से लोग मिश्रित भाषा कहते हैं, उसे टूटी- फूटी तथा अपभ्रंश भी कहते हैं किंतु यह अशुद्ध हिंदी न होकर भारत में बोली जाने वाली हिंदी की एक जीवंत बोली है जिसका अपना विशिष्ट व्याकरण है तथा फीजी के परिवेश के अनुकूल शब्द भंडार है। फीजी हिंदी पर कई विद्वानों ने महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं जिनमें रेमंड पिल्लई का 'अधूरा सपना' और सुब्रमनी का 'डउका पुराण' तथा 'फीजी माँ' प्रमुख हैं।

मूल शब्द: प्रवासी, भारतवंशी, फीजी हिंदी, गिरमिटिया

प्रस्तावना

'फीजी हिंदी' फीजी में बसे भारतीयों द्वारा विकसित हिंदी की नई भाषिक शैली है जो अवधी, भोजपुरी, फीजियन, अंग्रेजी आदि भाषाओं के मिश्रण से बनी है। फीजी के प्रवासी भारतीय मानक हिंदी की तुलना में, फीजी हिंदी भाषा में अपनी भाव-व्यंजनाओं को अच्छी तरह से अभिव्यक्त कर पाते हैं। इसीलिए भारतवंशी साहित्यकारों ने अंग्रेजी भाषा के मोह को छोड़कर हिंदी में साहित्यिक कृतियाँ लिखनी प्रारंभ कीं। मातृभाषा के इसी प्रेम के फलस्वरूप फीजी हिंदी की साहित्यिक कृतियों का सृजन भी हुआ है, जिनमें रेमंड पिल्लई का 'अधूरा सपना' और सुब्रमनी का 'डउका पुराण' प्रमुख हैं।

डॉ. विमलेश कांति वर्मा का यह विचार है कि "भाषा सुरक्षित और सबल तब होती है जब वह सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है। लिखित अभिव्यक्ति के लिए भाषा पर अच्छा अधिकार होना आवश्यक है। यह अधिकार सीखी हुई भाषा पर उतना कभी नहीं होता जितना अपनी मातृभाषा पर अधिकार होता है। ये भाषा रूप ही उनकी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रभावशाली भाषा रूप हो सकते हैं।" हालांकि फीजी में अंग्रेजी और मानक हिंदी में साहित्य सृजन तो प्रारंभिक दौर से होता आ रहा किन्तु, फीजी हिंदी का साहित्य सृजन का विकास 21वीं शताब्दी के पहले दशक में प्रो. सुब्रमनी की कृति 'डउका पुरान' के प्रकाशन से आरंभ हुई, जो फीजी हिंदी भाषा की प्रथम औपन्यासिक कृति है।

वस्तुतः फीजी हिंदी भाषा के साथ अक्सर यह संदेह रहा है कि वह एक अपूर्ण टूटी-फूटी, व्याकरण हीन भाषा है, और इसका प्रयोग सिर्फ बोल-चाल के लिए ही उपयुक्त है, किंतु प्रो. सुब्रमनी की बृहत औपन्यासिक कृति 'डउका पुरान' ने इस रूढ़ि-बद्ध धारणा को निरर्थक साबित कर दिया।

फीजी हिंदी में लिखित कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथों की व्याख्या इस प्रकार हैः-

फीजी हिंदी – रॉडनी मोग

फीजी हिंदी पर कई विदेशी विद्वानों ने महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं जिसमें रोडने मोग का ग्रंथ 'फीजी हिंदी' एक महत्वपूर्ण परिचयात्मक ग्रंथ है। 'फीजी हिंदी' अमेरिकी भाषावैज्ञानिक डॉ.रॉडनी मोग द्वारा लिखित पुस्तक है। इन्होंने फीजी में कई वर्ष रहकर, फीजी की भाषा और संस्कृति का अध्ययन कर, भाषावैज्ञानिक दृष्टि से इस ग्रंथ को लिखा है। प्रस्तुत पुस्तक फीजी हिंदी के भाषिक स्वरूप पर आधारित है। यह पुस्तक छह अध्यायों में विभक्त है जिसे लेखक इकाई की संज्ञा देता है। फीजी हिंदी भाषा के व्याकरणिक विवेचन के अतिरिक्त इसमें पाठकों के लिए व्याकरणिक अभ्यास भी दिए गए हैं। पुस्तक के आरंभ में लेखक की एक संक्षिप्त भूमिका है जिसमें वे लिखते हैं "सन् 1879-1920 के मध्य गिरमिटियों के रूप में भारतीय भारत के विभिन्न क्षेत्रों से फीजी आए और अपनी-अपनी भाषाएँ बोलते थे किंतु कलांतर में सबके मिश्रण से बनी फीजी हिंदी जिसका प्रयोग सभी भारतीयों ने किया।"[2] डॉ.रॉडनी मोग द्वारा लिखी गई यह पुस्तक फीजी हिंदी का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से किया गया महत्वपूर्ण अध्ययन है।

से इट इन फीजी हिंदी (Say it in Fiji Hindi) - जे.एफ. सीगल

सन् 1977 में जे.एफ. सीगल ने 'से इट इन फीजी हिंदी' नामक वार्तालाप पर आधारित पुस्तिका लिखी। इस 77 पृष्ठों की लघु वार्तालापी पुस्तिका का प्रकाशन पसिफिक पब्लिकेशंस, सिडनी में हुआ था। पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर लिखा हुआ है कि यह फीजी की आधी से अधिक जनसंख्या की दैनिक व्यवहार के लिए उपयोगी पुस्तक है। भूमिका में लेखक कहते हैं कि फीजी हिंदी को बहुत से लोग मिश्रित भाषा कहते हैं, उसे टूटी- फूटी तथा अपभ्रंश भी कहते हैं किंतु यह अशुद्ध हिंदी न होकर भारत में बोली जाने वाली हिंदी की एक जीवंत बोली है जिसका अपना विशिष्ट व्याकरण है तथा फीजी के परिवेश के अनुकूल शब्द भंडार है।[3]

डउका पुरान –प्रो. सुब्रमनी

प्रोफेसर सुब्रमनी फीजी के प्रमुख गद्य लेखकों, निबंधकारों और आलोचकों में से एक हैं। एक सृजनात्मक लेखक समाज में मूल्यों और बौद्धिकता को स्थापित करता है। जिस प्रकार से तुलसीदास, कबीरदास, रहीम, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मुंशी प्रेमचंद, आदि साहित्यकारों ने तटस्थ होकर समाज के सत्य को पाठकों के समक्ष रखा, उसी भांति प्रो. सुब्रमनी अपने साहित्य के माध्यम से फीजी के निम्न वर्गीय समाज की संवेदनाओं और प्रवासी जीवन के संघर्षों को पाठकों के समक्ष यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते हैं। सुब्रमनी ने कई साहित्यिक और साहित्येतर पुस्तकों का लेखन किया है जो फीजी के पारिवारिक जीवन, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक परिवेश, इतिहास तथा लोगों के चिंतन को दर्शाते हैं। वे एक सृजनशील लेखक ही नहीं बल्कि फीजी के एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते अपने देश के लोगों को जागृत करने का प्रयास भी करते हैं।

'डउका पुरान' फीजी हिन्दी साहित्य की एक ऐतिहासिक तथा महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसका प्रकाशन स्टार पब्लिकेशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 2001 में हुआ। 'डउका पुरान' उपन्यास के अतिरिक्त प्रो. सुब्रमनी की कहानी संग्रह 'कला की तलाश' हिंदी में उपलब्ध है। 'डउका पुरान' की भाषा ही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रोफेसर सुब्रमनी ने फीजी के भारतियों की भाषा, रीति-रिवाज़, सोच-विचार, आकांशाएं, उत्थान एवं पतन, मनोविनोद, खेती-बारी, परंपरा गत विश्वास तथा उनके भीतर अंकुर रूप में फूट रहे प्रवृतियों के अध्ययन द्वारा राजनीतिक, पारिवारिक विघटन, अंधविश्वास, जमीन की लीस आदि समस्याओं का बड़ा ही सटीक चित्रण किया है।[4] 'डउका पुरान' हिंदी के विस्तार का अनूठा प्रामाणिक दस्तावेज है। अपने रचना के माध्यम से उन्होंने फीजी हिंदी भाषा को लिपिबद्ध करते हुए, साहित्य जगत में इसे महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

हिंदी समाचार पत्रिका, ऑस्ट्रलिया ने 'डउका पुरान' की व्याख्या इस प्रकार की है- "डउका पुरान एक ऐतिहासिक और मनोरंजक पुराण जो विशेषकर फीजी के भारतीय मूल वासियों के लिए एक अमूल्य पुस्तक है जो अतीत को जागृत करता है। यह उपन्यास फीजी के गाँव वासियों का जीवन, मण्डलियों की स्थापना, त्योहार, गाँव से शहर का निर्माण, ग्रमाफोन, रेडियो, सिनमा कैसे उनके जीवन में आए की विस्तृत कथा है।"[5] उपन्यास का नायक फीजीलाल सच्चे प्यार तथा एक महान नेता की खोज में फीजी के गाँवों तथा शहरों की यात्रा पर निकलता है। लेखक ने इसकी कथा को सात अध्यायों में विभक्त किया है।

अधूरा सपना- रेमंड पिल्लई

रेमंड पिल्लई फीजी के प्रसिद्ध और प्रमुख लेखकों में से एक हैं। उन्हें न केवल फीजी में ही बल्कि दक्षिण प्रशांत के साहित्यिक क्षेत्र में भी अग्रणी कलाकार माना जाता है। सन् 1980 में उन्होंने अपना पहला अंग्रेजी लघु कहानी संग्रह 'द सेलिब्रेशन' प्रकाशित की। उनकी कृति 'अधूरा सपना', फीजी हिंदी में लिखी प्रसिद्ध साहित्यिक कृति है। 'अधूरा सपना' पर 2007 में विमल रेड्डी के निर्देशन में हिंदी फिल्म बनी और रेमंड पिल्लई ने पहली फीजी हिंदी फिल्म 'अधूरा सपना' के लिए पटकथा लिखकर अपना नाम फीजी हिंदी साहित्य के इतिहास में दर्ज करा लिया । 'अधूरा सपना' की कहानी एक मेहनती भारतीय गन्ना किसान के बारे में है, जिसकी पत्नी चाहती है कि वे सुखी जीवन के लिए विदेश जाकर बस जाए।

प्रो. बृज वी. लाल के अनुसार, "रेमंड पिल्लई लघु कथा साहित्य के प्रमुख लेखक रहे हैं, उन्होंने अपनी सहज शैली में भारतीय-फीजियन समुदाय के आंतरिक अनुभव को बड़े हास्यात्मक शैली और संवेदनशीलता के साथ कैप्चर किया है ... ये रेमंड पिल्लई जैसे लोग हैं जिन्होंने इस विचार को हमारे बीच रोप दिया कि हमारी दुनिया लिखने लायक है और अगर हमने ऐसा नहीं किया, तो कोई नहीं करेगा।"[6] फिल्म 'अधूरा सपना' ने फीजी में बसे भारतीय प्रवासियों के संघर्ष को वैश्विक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विस्थापित लोगों की सांस्कृतिक पहचान को नया आयाम देने में डायस्पोरिक सिनेमा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। आज डायस्पोरिक सिनेमा न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्पाद भी है।

कोई किस्सा बताव- प्रवीन चंद्रा

सन् 2018 में फीजी हिंदी की प्रथम कहानी संग्रह 'कोई किस्सा बताव' का संपादन श्री प्रवीण चंद्रा द्वारा किया गया । इस कहानी संग्रह में फीजी के वरिष्ठ साहित्यकारों; प्रो. सुब्रमनी, प्रो. सतेन्द्र नंदन, डॉ. ब्रिज लाल, डॉ. रामलखन प्रसाद, श्रीमान खेमेंद्रा कुमार , श्रीमती सरिता चंद, श्रीमान नरेश चंद, श्रीमती सुभाशनी कुमार आदि लेखकों ने फीजी हिंदी भाषा में अपनी कृतियों को संकलित किया है। 'कोई किस्सा बताव' कहानी संग्रह एक ऐसी कलाकृति है जिसमें फीजी के प्रवासी भारतीयों की जीवन शैली को कहानी की विधा में बाँधा गया है।

भूतपूर्व फीजी निवासी श्री प्रवीण चंद्रा जो फिलहाल ब्रिसबेन, ओस्ट्रेलिया में निवास कर रहे हैं ने इस संग्रह का सम्पादन और संकलन किया है। 'कोई किस्सा बताव' कहानी संग्रह का प्रकाशन ऑस्ट्रेलिया के कारिन्दाले प्रकाशन और यूनिवर्सिटी ऑफ़ द साउथ पैसिफ़िक द्वारा किया गया है। इस 191 पृष्ठों के संकलन में सोलह कहानियाँ, एक कविता और एक अप्रकाशित उपन्यास का अंश भी शामिल किया गया है।[7] कोई किस्सा बताव' कहानी संग्रह की कहानियों का विषय वैविध्यपूर्ण है। फीजी का प्राकृतिक सौदर्य, लोगों का दुख-दर्द, पारिवारिक विघटन, समाज में बिखराव, ठहराव, हताशा ,लाचारी, हँसी-मजाक, जीवन के खट्टे-मीठे क्षणों आदि विविध विषयों को कहानी में स्थान दिया है।

फीजी माँ- प्रो. सुब्रमनी

प्रो. सुब्रमनी फीजी हिंदी को सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अधिक समर्थ समझते हैं इसीलिए उन्होंने अपना बृहत उपन्यास फीजी हिदी में लिखकर विश्वव्यापी ख्याति अर्जित की। उनका दूसरा उपन्यास 'फीजी माँ' है। प्रो. सुब्रमनी के उपन्यास 'फीजी माँ' अपनी तरह की एक अलग कृति है। सन् 2019 में इसका लोकार्पण द यूनिवर्सिटी ऑफ फीजी के 'ग्लोबल गिरमिट इंस्टिट्यूट' ने 'अंतरराष्ट्रीय गिरमिट

कॉन्फ्रेंस'के दौरान किया। यह पुस्तक फीजी बात अर्थात् फीजी हिंदी में लिखी गई है, जो सुल्तानपुर और फैज़ाबाद के आसपास की बोले जाने वाली अवधी का ही विस्तारित स्वरूप है। यह बृहद औपन्यासिक कृति 1026 पृष्ठों की है जिसमें प्रोफेसर सुब्रमनी ने ऐसी जानकारियां दी हैं, जो पाठक को स्तब्ध करती हैं।

'फीजी माँ: हजारों की माँ'में लेखक ने अपनी निजी यादों और जीवन काल की स्मृतियों को नायिका वेदमती के द्वारा अभिव्यक्त किया है। इस उपन्यास के संबंध में डॉ. दानेश्वर शर्मा का विचार हैं कि "जैसे फीजी हिंदी को साहित्यिक सृजन की भाषा के रूप में मान्यता मिल रही है, तो वहीं सुब्रमनी द्वारा लिखित दूसरा उपन्यास 'फीजी माँ' फीजी हिंदी की यात्रा में एक और मील का पत्थर है।"[8] डॉ. दानेश्वर शर्मा के अनुसार उपन्यास के मूल तत्व में महिलाओं की मुक्ति, सबाल्टर्न (subaltern) इतिहास, मदर इंडिया का वैश्विक विस्तार, सुदूर द्वीपों का ग्रामीण जीवन, विदेशी भूमि में भारतीय संस्कृति और प्रवास का आघात शामिल हैं। उपन्यास की कथा वेदमती के बचपन से स्कूली शिक्षा, दांपत्य जीवन में ग्रामीण लम्बासा गाँव से शहरी विधवा, और उसकी वृद्धावस्था का अनुसरण प्रस्तुत करती है। वृद्धावस्था में भिखारी वेदमती, सुवा शहर की व्यस्त सड़कों पर एक बैंक के द्वार पर बैठी अपनी कहानी को याद करती है।

'डउका पुरान' और 'फीजी माँ: हजारों की माँ', दोनों उपन्यास गिरमिट काल से चले आ रहे भारतवंशियों की जीवन यात्रा का एक अनमोल संग्रह है। इन उपन्यासों में उनके अनुष्ठानों, प्रथाओं और रीति-रिवाजों को दर्ज किया गया है ताकि भावी पीढ़ी साहित्यिक मनोरंजन के अलावा, इसका महत्व एक ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय दस्तावेज के रूप में भी उठा सकेगा।

दक्षिण प्रशान्त महासागर में स्थित फीजी एक बहुजातिय और बहुसांस्कृतिक द्वीप देश है जहाँ पर फीजियन, हिन्दुस्तानी, चीनी, यूरोपीयन, कोरीयन, रोतूमन आदि जातियाँ रहते हैं। इस सांस्कृतिक विविधता को फीजी हिंदी साहित्य में दर्शाया गया है। फीजी हिंदी साहित्य की अधिकत्म रचनाएं आत्मकथात्मक है जिनके माध्यम से साहित्यकारों ने अपने तथा अपने पूर्वजों के गिरमिट काल की त्रासदियों, अनुभवों, संवेदनाओं, मान्यताओं, मूल्यों तथा वर्तमान जीवन शैली को लिपिबद्ध किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. विमलेश कांति. 2017 (जनवरी-अप्रैल). गिरमिटिया हिंदी: संवर्धन और संरक्षण. गगनांचल. अंक 1-2, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली पृष्ठ. 8
2. रॉडनी मोग.1977. Fiji Hindi: A basic course and reference grammar. Canberra: Australian National University.
3. जे.एफ. सीगल.1977. सए इट इन फीजी हिंदी (Say it in Fiji Hindi). Pacific Publications (Aust) Pty Ltd. Sydney.
4. सुब्रमनी. 2001. डउका पुराण. स्टार पब्लिकेशन, नई दिल्ली. भूमिका.
5. हिंदी समाचार पत्रिका, ऑस्ट्रलिया vol4 no6 June 2001 p.1.
6. Vijay, Mishra. Literature of the Indian Diaspora: Theorizing the Diasporic Imaginary. New York: Routledge, 2007, p.28.
7. प्रवीण चंद्रा. 2018. कोई किस्सा बताव. सम्पादकीय. कारिन्दाले प्रकाशन, ऑस्ट्रेलिया और यूनिवर्सिटी ऑफ़ दा साउथ पैसिफ़िक पृष्ठ 6.
8. Daneshwar Sharma. December, 2008. Subramani's Fiji Maa: A Book of a Thousand Readings. Transnational. http://fhrc.flinders.edu.au/transnational/home.html